सामाजिक समस्याएँ --

कोई भी साहित्यकार जब साहित्य सृजन करता है तब वह अपने युग की, परिस्थितियों से अछूता नहीं रह सकता उसके युग की समस्याएँ, उसके युग के रीति-रिवाज आदि सभी का चित्रण उसकी रचनाओं में पाया जाता है। नागार्जुन का जन्म मिथिला के अंचल में हुआ और उसी के वातावरण में वे पले, बढ़े हुए। हालांकि उनकी शिक्षा-दीक्षा वाराणसी मे हुई फिर भी वे अपने पुराने माहौल के बाहर निकल न सके। परिणामस्वरूप हम पाते है कि उनके उपन्यासों में या उनकी सभी रचनाओं में कहीं-न-कहीं मिथिलांचल झलकता ही है।

नागार्जुन के आरंभिक उपन्यासों में उनके द्वारा जिन घटनाओं का चित्रण हुआ है वह उन्होंने स्वयं भोगा है। उनका प्रथम उपन्यास 'रतिनाथ की चाची' है। कहा जाता है कि इस उपन्यास का नायक रतिनाथ लेखक स्वयं है। जिन घटनाओं का चित्रण उन्होंने इसमें किया हैं, वे सभी घटनाएँ उनके जीवन को दर्शाती है। इसलिए कहा जा सकता है कि वे अपने युग की मनोवृत्ति और विचारधारा से अछूते नहीं रहे। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व में कोई मौलिक भेद नहीं पाया जाता। ग्रामीण समाज के जिन पहलूओं को, जिन रूढियों को रीति-रिवाजों को उन्होंने स्वयं देखा था, अनुभव किया था, उनका चित्रण इस उपन्यास में हम पाते है। उनके उपन्यासों में आये पात्र व वर्णित घटनाएँ संपूर्ण देश के अभावों को झेलते, व्यवस्था से टकराते और सामाजिक बदलाव की तीव्र आकांक्षा लिये हुए है।

'रतिनाथ की चाची' उपन्यास में नागार्जुन ने मिथिला के अंचल विशेष के ग्रामीण जन-जीवन का चित्रण कर वहाँ की समस्याओं का उद्घाटन करने का प्रयास किया है। वहाँ की संस्कृति, लोकजीवन, परंपराओं, रूढियों, अंधविश्वासों, परिवर्तन की नयी दिशाओं आदि का उन्होंने यथार्थ दृष्टि से चित्रण किया है। इसके साथ-ही-साथ ग्रामीण जीवन में प्रचलित विभिन्न प्रकार के भेद-भावों की, अनमेल विवाह, बाल विवाह, वृद्ध विवाह, अशिक्षा, अनैतिकता, धार्मिक

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY * KOLHAPUR *

शोषण, पूंजीपतियों के अन्याय, भूकम्प, मलेरिया, अछूत समस्या, वर्ग संघर्ष जैसी कई समस्याओं का चित्रण किया गया है। कोई भी सृजनशील साहित्यकार इन समस्याओं को देखकर उनकी ओर से उदासिन नहीं रह सकता और फिर नागार्जुन तो एक संवेदनशील साहित्यकार रहे हैं। वे इससे कैसे अछूते रह सकते हैं ?

'रतिनाथ की चाची' में आयी समस्याओं को हम निम्नलिखित विभागों में विभाजित कर सकते हैं' --

(१) विधवा समस्या ।
(२) विवाह समस्या ।
(३) स्त्री-विक्रय समस्या ।
(४) नारी द्‌वारा नारी की उपेक्षा ।
(५) यौन समस्या ।
(६) शिक्षा समस्या ।
(७) अंधश्रद्‌धा कुरीतियाँ ।
(८) धार्मिक शोषण ।
(९) पुरुष निष्ठुरता ।
(१०) महाजनी शोषण ।
(११) वर्ग संघर्ष ।
(१२) अछूत समस्या ।
(१३) भूकंप, मलेरिया जैसी प्राकृतिक समस्याएँ ।
(१४) पारिवारिक समस्याएँ ।
(१५) अमानवीय कृत्य ।

(१) विधवा समस्या --

भारतीय समाज में वैधव्य एक बहुत बड़ा अभिशाप माना जाता है। प्राचीन काल से लेकर आजतक विधवाओं की ओर देखने का समाज का रवैया बिलकुल अलग ही रहा है। समाज में उन्हें न के बराबर स्थान है। समाज हमेशा उन्हें

उपेक्षा को निगाह से देखता है। मुगलकाल में तो सती प्रथा के द्वारा विधवा को पति की चिता के साथ ही भस्म कर दिया जाता था और इस प्रकार वह इस विडम्बनापूर्ण जीवनसे मुक्ति पा जाती थी किन्तु समाज सुधारकों के प्रयत्नस्वरूप परवर्तीकाल में नारी की संत्रासमय स्थिति को सुधारने हेतु कानून द्वारा अवैध घोषित किया गया। किन्तु विधवा विवाह का प्रचलन नहीं हो सका और नारी की स्थिति अधिक कुण्ठामय एवं त्रासमय बन गयी। धर्म और शास्त्रानुसार कड़े से कड़े नियमों का पालन उन्हें करना पड़ता है। उसके कदम अगर जरा कहीं डगमगाये तो उसे कड़ी से कड़ी सजाएँ भी मिल जाती। समाज से बहिष्कृत भी किया जाता था। ऐसी मान्यता थी कि चाहे कितनी ही कम उम्र में उसे विधवा होना पड़ा हो तो भी उसने कठोर से कठोर संयम का पालन करना चाहिए। उन्हें समाज में बहुत ही संभलकर कदम उठाने पड़ते थे। उन्हें इस कदर सताया जाता था कि वे आत्महत्या करने पर विवश हो जातीथी। वे सोचती कि इससे अच्छा जीवन तो कीड़े-मकोड़ों का है। एक अकेली, असहाय विधवा को पूरा समाज मिलकर सताता था।

ऐसी ही एक समाज द्वारा पीड़ित, प्रताड़ित विधवा की कथा कहनेवाला नागार्जुन का उपन्यास 'रतिनाथ की चाची' है। इस उपेक्षित, अपमानित और यातनापूर्ण जीवन जीती गौरी का जन्म एक मध्यवर्गीय ब्राह्मण परिवार में हुआ। उनकासंपूर्ण बचपन सुखपूर्ण रहा। कुलीनता की दृष्टि से बड़े परंतु आर्थिक विपन्नता से युक्त मैथिल ब्राह्मण परिवार में एक दमे के रोगी और सुस्त प्रकृति के व्यक्ति के साथ गौरी का विवाह कर दिया गया। एक पुत्र उमानाथ और एक पुत्री प्रतिभाभा को छोड़कर उसकी मृत्यु हो जाती है। वह पतिगृह में रहकर अपना स्वाभिमान दिखाती है और यहीं से उसके प्रताड़ित जीवन की शुरुवात होती है।

गौरी का देवर जयनाथ एक कामुक चरित्रवाला व्यक्ति है। वह गौरी को अपनी वासना का शिकार बनाता है। गौरी के गर्भवती हो जाने के बाद उसे समाज की प्रताड़ना तिरस्कार सहना पड़ता है।

' इस स्थिति का वास्तविक कारण खोजती हुई गौरी इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि यह ' दरिद्र कुल में लड़की ब्याहने का ही परिणाम था । गौरी उस अमावस की भयावह रात को याद करती है कि एक धनी और अंधेरी छाया मेरे बिस्तरे की तरफ बढ आई । उसके बाद क्या हुआ इस बात का होश अपने को नहीं रहा । जब होश आया तो पाया कि वह समाज की दृष्टि से पतित हो गई । ' [१]

यहीं से उसके कष्टपूर्ण जीवन की यात्रा आरंभ होती है । इस पतित अवस्था में करुणामय जीवन जीनेवाली गौरी असहायता के कुहासे में आत्मग्लानी एवं व्यथा में झुलसती रहती है । इस संदर्भ में बाबूराम गुप्त जी का कथन है कि --

' सर्वप्रथम तो समाजपतियों की कूटनीतिक शतरंज की खिलाडी दमयंती जो बाल-विधवा होने पर भी रंगरलियों से भरपूर जीवन जी चुकी है, गौरी की असहाय अवस्था का केवल उपहास ही नहीं करती, वरन उसके सामाजिक बहिष्कार का उपक्रम कर गौरी के भावी जीवन को और भी अधिक असहाय एवं अंधकारपूर्ण बनाने का कुटिल प्रयास करती है । इस प्रकार गौरी गाँव को उपेक्षा का भाजन बनकर आत्मग्लानि की व्यथा में जलती रहती है । ' [२]

गौरी का चरित्र भावकुलतापूर्ण होते हुए भी एक संजीदगी लिये हुए है । अंत तक आते-आते समाज उसके सारे दोषों और कलंक को माफ कर देता है, और वह दया, करुणा और प्रेम मूर्ति के रूप में विलिन हो जाती है ।

गौरी के चरित्र के माध्यम से वहाँ के समाज की गहरी जडे जमाये अंतर्विरोधों की परतों को उधेड दिया गया है । गौरी समाज के आरोपित लांछन, अंधविश्वास, एवं क्रूरता के कारण अपने जीवन का दयनीय अंत कर लेती है । ' [३]

---

१ तेजसिंह - नागार्जुन का कथा-साहित्य - पृ. ५७ ।

२ बाबूराम गुप्त - उपन्यासकार नागार्जुन पृ. ७८ ।

३ वही पृ. १०३ ।

सिर्फ गौरी ही नहीं उपन्यास में अन्य कई विधवाओं का,उनके जीवन का,उनकी त्रासदियों का चित्रण किया गया है। काशी की विधवा सुशीला जब जयनाथ से यह कहती है कि --

'तुम जिस जाति में,जिस समाज में पैदा हुए हो वह जिंदा नहीं मुर्दा धार है,वह छाड़न है।' [१]

तो उसका समाज के प्रति रोष प्रकट होता है। यहाँ तक कि गौरी की माँ भी कहती है --

'जिस समाज में हजारों की तादाद में जवान विधवाएँ रहेंगी वहाँ यही सब होगा...' [२]

उनकी यह बात स्पष्ट करती है कि एक विधवा का समाज में होना, समाज के भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने का कारण बन जाता है। चाहे गौरी कितनी भी कोशिश कर अपने आप को राजनीतिक कार्यों में व्यस्त कर देती है या चरखा चलाने में व्यस्त रहने लगती है, फिर भी उसे छुटकारा तो मौत ही दिलाती है।

एक और विधवा का परिचय उपन्यासकार ने इस उपन्यास में कराया है। वह है -- जयकिशोर की विधवा माँ। उसने अपने बेटे को कई मुसीबतें झेलकर बड़ा किया है। उसके बेटे को जो सामाजिक प्रतिष्ठा है उसकी माँ का बहुत बड़ा योगदान रहा है। उसके बेटे के हृदय में भी अपनी माँ के प्रति संपूर्ण समर्पण का भाव,श्रद्धा का भाव रहा है। इसके विपरीत उमानाथ जो दमयंती की बातों में आकर अपनी माँ को लात मारता है, उसे गालियाँ देता है और ताउम्र उससे रूखेपन से पेश आता है। वह स्वयं तिल-तिल गलकर उसकी शादी के लिये रूपये इकठ्ठा करती है और उमानाथ उसे घुड़कियाँ देता है। बाद में घर में उसकी बात सुननेवाला भी कोई नहीं रह जाता। उसकी बहू भी अपने पति की बात मानकर

---

१ नागार्जुन - रतिनाथ की चाची - पृ.१७७।

२ वही - पृ.२८।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR
SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

अपनी सांस को प्रताड़ित करती है। इसलिये उसका पूरा जीवन दु:ख-दर्द से युक्त बन जाता है। इन सभी दु:खों को सहते-सहते वह इतनी टूट जाती है कि वह सोचने लगती है --

'हे भगवान, अगले जन्म भले ही मैं चुहिया होऊँ, भले ही नेवला, मगर चेतनामय इस मानव समाज में फिर कभी न पैदा होऊँ।' [१]

समाज विधवाओं पर सिर्फ नैतिक बंधन ही नहीं डालता बल्कि उनके खानपान के बारे में भी काफी बंधन उन पर डाले जा चुके हैं। गौरी की माँ विधवा का जीवन बीता रही है। वह निरामिषभोजी है। रतिनाथ की चाची भी मांस-मछली नहीं खाती थी।

विधवा को समाज का कितना अन्याय, अत्याचार सहना पड़ता है इस बात का पता हमें सुशीला के जीवन की घटनाओं को जानने के पश्चात मिलता है। सुशीला बालविधवा हो जाने के बाद जेठानी और ननद के दुर्व्यवहार से तंग आकर मायके में रहने लगती है। वहाँ भाभी से खटपट हो जाने के बाद भागकर काशी आ जाती है। फिर एक घाटिया महाराज के पल्ले पडी बाद में एक खत्री दूकानदार के घर की मालकीन बन जाती है। विधवा का समाज में एक उपभोग का साधन माना जाता है।

इस प्रकार विधवाओं की स्थिति समाज में कितनी बदतर हो गयी है, इसका चित्रण नागार्जुन ने गौरी जैसे समाज द्वारा प्रताडित चरित्र को लेकर किया है। उपन्यास में भले ही अन्य विधवाओं का वर्णन आया है फिर भी गौरी भारतीय विधवाओं का प्रतिनिधित्व करती है। उसे माफ नहीं करता और अंत में वह गल-गलकर मर जाती है। इस कदर नाटकीय जीवन समाज की विधवाएँ भोग रही है, इसका चित्रण नागार्जुन ने अत्यंत सफलता के साथ किया है।

---

१ नागार्जुन - रतिनाथ की चाची - पृ.१३३।

(२) विवाह समस्या --

विवाह एक सामाजिक संस्था है । स्त्री-पुरुष के व्यक्तिगत जीवन को स्थिरता प्रदान करनेवाला विवाह एक तत्व है । विवाह को एक नैतिक बंधन तथा धार्मिक पवित्रता के रूप में स्वीकार किया गया है । नागार्जुन ने अपने उपन्यास 'रतिनाथ की चाची' में विवाह के कई प्रकारों का जिक्र किया है, जैसे बहू-विवाह, अनमेल-विवाह आदि और उनसे उत्पन्न होनेवाली समस्याओं को भी उन्होंने इस उपन्यास में दर्शाया है जैसे दहेज समस्या, विधवा समस्या आदि ।

(अ) बहु-विवाह -

इस उपन्यास में प्रबलतम रूप में पायी जानेवाली समस्या है बहुविवाह । नागार्जुन ने इस उपन्यास में ऐसे कई व्यक्तियों का चित्रण किया है जिन्होंने बहु-विवाह किये हैं । यह समस्या नारी जीवन के वैवाहिक पक्ष से संबंधित और सामन्ती समाज व्यवस्था की विलासी मनोवृत्ति की द्योतक है । इस प्रथा की वजह से अधिकतर नारी-शोषण को बढावा मिला । समाज में अनैतिकता और भ्रष्टाचार को प्रश्रय मिला । बहुविवाहों को और अधिक प्रोत्साहन देने के लिये कुलीनता का आग्रह कारण बना और इसी आग्रह की वजह से मैथिल ब्राह्मणों को अनेक कन्याएँ विवाह के लिए मिल जाती थी । नागार्जुन ने अपने उपन्यास 'रतिनाथ की चाची' में इस समस्या पर विस्तारसे चर्चा की है । स्वयं रतिनाथ के नाना की दस विमाताएँ थीं । जयनाथ के परदादा ने इक्कीस शादियाँ की थीं । मिथिला जनपद में लगनेवाला 'सौराठ का मेला', मैथिल ब्राह्मणों का वैवाहिक मेला है । यह विवाह का मेला भ्रष्टाचार का केन्द्र है । वधु अथवा वर की कुलीनता को स्थापित करने के पीछे मनमानी बातें, मनगढंत बातें गढ लेते हैं । इससंदर्भ में बाबूराव गुप्त जी का कथन महत्वपूर्ण है 'मिथिला में प्रचलित 'बिकौआ' प्रथा भी बहु-विवाह समस्याके मूल में रही है । कुलीन ब्राह्मण वर इस प्रथा के अंतर्गत बाईस-बाईस तक विवाह करता था और उसका सारा जीवन ससुरालों में ही कटता था । परिणाम था कि ऐसे पति की पत्नियाँ अन्य लोगों से सम्बन्ध स्थापित

कर लेती थी और समाज में व्यभिचार पनपता था। 'रतिनाथ की चाची' उपन्यास में चित्रित जनक किशोरी, शकुंतला और नीलमणि का विवाह 'बिकोआ' से ही हुआ था तथा इनमें से अधिकांश के किसी-न-किसी से अवैध संबंध थे। शकुन्तला का तीसरा लड़का हूबहू उसके चचेरे भाई की शक्ल का था। जनक किशोरी की दोनों संतानें कुल्ली राऊत की परंपरा में आती थी।'[१]

शुभंकरपुर का निवासी भोला पंडित, जिसकी आयु सत्तर साल की हो चुकी है, जीवन की इस लम्बी यात्रा में वह अपनी पण्डिताई और धार्मिक ग्रंथों के पारायण के लिए एवं पूजा-अर्चा के लिए शुभंकरपुर के जमींदार राजाबहादुर दुर्गा-नंदनसिंह से लेकर बनैली के राजा कीर्त्यानंदसिंह तक और भागलपुर के सबसे धनी मारवाड़ी होते हुए भी वह गृहस्थी में अपने बाल-बच्चों का सुख नहीं प्राप्त कर सका। पहली पत्नी को बरसों तक संतान न हो सकने के कारण वह अपनी पैतालिस बरस की आयु में पुत्र-प्राप्ति की लालसा से दूसरी शादी कर लेता है। दूसरी पत्नी से एक लड़की और एक लड़का तो हो जाता है लेकिन लड़का नौ महिने के बाद भगवान को प्यारा हो जाता है। इसके बाद उसे कोई संतान नहीं होती। दूसरी शादी तो हो जाती है लेकिन पहली पत्नी और दूसरी पत्नी (रामपुरवाली) में सौतेलापन का मत्सरभाव होने के कारण दोनों बात-बात पर मुर्गियों की तरह आपस में लड़ती रहती है। झगड़े से तंग आकर पहली पत्नी पाँच साल तक अपने मायके चली जाती है। अतः स्पष्ट है कि दूसरे विवाह से पुत्र प्राप्ति तो नहीं होती परंतु घर की शांति चली जाती है।

भारतीय समाज की सामाजिक समस्याओं में यह बहुपत्नी प्रथा सामन्ती समाज की प्रमुख देन है। सामन्ती समाज-व्यवस्था में कुलीन वर्ग में अनेक पत्नियों का होना सामाजिक प्रतिष्ठा का लक्षण माना जाता था। रतिनाथ की चाची उपन्यास में नागार्जुन ने बहु-विवाह प्रथा के दुष्परिणामों की ओर संकेत किया

---

१ बाबूराम गुप्त - उपन्यासकार नागार्जुन - पृ.८३।

है। कि इससे पत्नियों के अन्य लोगों से अनैतिक सम्बन्ध बनते हैं और व्यभिचार फैलता है।

(ब) <u>अनमेल-विवाह</u> -

अनमेल-विवाह सामन्ती व्यवस्था का एक भयंकर दोष रहा है, जिसके कारण नारी-जाति का अत्यधिक शोषण हुआ। स्त्रियों की इच्छा-अनिच्छा का सामन्ती व्यवस्था में कोई मूल्य न था, मूल्य था सामन्तों की वासना परितृप्ति का। इसके लिए कन्याओं को उनके गले से बाँध दिया जाता था। नारी के शोषण में अनेमल विवाहों की भी बहुत बड़ी भूमिका रही है। गरीबी और अशिक्षा की चक्की में गाँव बुरी तरह पिस रहे थे और नारी का यह सामाजिक शोषण उसकी एक नियति बन गया था। फूल सी सुकुमारी को किसी वृद्ध के साथ विवाह करने को विवश कर दिया जाता था। उसके हृदय कुसुम को खिलने से पूर्व ही मसल दिया जाता था और वह कुढ़-कुढ़ कर अपने जीवन के दिन बिता देती थी।

इस अनेमल-विवाह का दुष्परिणाम यह होता था कि या तो वह लड़की विधवा हो जाती थी या वह किसी नवयुवक के साथ भाग जाती थी। नागार्जुन ने अपने उपन्यास रतिनाथ की चाची में इस समस्या को चित्रित किया है। आलोच्य उपन्यास में गौरी का विवाह वैधनाथ झा से केवल इसी मोह में हुआ था कि कुलीनता की दृष्टि से वह गौरी के परिवार से ऊँचा था। यद्यपि वैधनाथ गौरी से आयु में बहुत बड़े, दमा के रोगी और प्रकृति से सुस्त थे। गौरी और वैधनाथ से उत्पन्न पुत्री प्रतिभामा भी एक वृद्ध खूसट व्यक्ति से ब्याही गयी।

इस प्रकार एक कच्ची उम्र की लड़की का अधेड़ उम्र के पुरुष के साथ विवाह कर दिया जाता था और इसी के परिणामस्वरूप वह बहुत जल्द विधवा बन जाती थी।

भोला पंडित ऐसे ही एक विवाह संयोजक हैं। कितने ही लूले, लंगड़े, अंधे, अपाहिज और बूढ़े भोला पंडित की कृपा से अधखिली कलियों जैसी बालिकाओं को गृह लक्ष्मी के रूप में पाकर निहाल हो गये। एक-एक विवाह में पचास रुपये अंधे

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.
SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

हुए थे।'[१]

रुपये के लोभ में कन्याओं का जीवन बर्बाद कर दिया जाता था। इस प्रकार एक सामाजिक बुराई को नागार्जुन ने अपने इस उपन्यास में दर्शाया है। उससे उत्पन्न होनेवाली और भी कई समस्याओं को भी उन्होंने चित्रित कर दिया है।

(३) स्त्री-विक्रय --

अपने समाज में सामाजिक,आर्थिक विषमताएँ पायी जाती हैं। इसमें रुढिवादी,परम्परावादी जड़ और गतिहीन शक्तियों का प्रभुत्व देखा जा सकता है। इस समाज में अनेक सामाजिक बुराइयाँ जन्म ले रही हैं।

'नारी विक्रय की समस्या भी एक भोले समाज व्यवस्था की देन है जिसमें समाज की स्थिति आर्थिक-सामाजिक दृष्टि से विषम हो।'[२]

नागार्जुन के उपन्यास रतिनाथ की चाची में भी यह समस्या दो रुपों में मिलती है। एक तो आर्थिक स्तर पर जहाँ उच्च या निम्न वर्ग गरीबी के कारण अपनी लडकियों को बेचने के लिये तैयार होता है और दूसरा उच्च वर्ग या मैथिल ब्राह्मण जो कुलीनता के झूठे दम्भ के कारण अपनी लडकियों को बेच देता है। रतिनाथ की चाची में हम देखते है कि ये दोनों ही प्रकार नारी विक्रय का कारण बने हुए है।

'प्रतिमामा सत्रह साल की थी, उसे ससुराल गए तीन - चार साल होने को आ रहे थे। कुलीनता की दृष्टि से बहुत ही नीच,मूर्ख और चालीस साल के एक अधेड ब्राह्मण ने सात सौ नकद गिनकर उससे शादी की।'[३]

---

१ नागार्जुन - रतिनाथ की चाची - पृ.६५।

२ तेजसिंह - नागार्जुन का कथा साहित्य - पृ.६५।

३ नागार्जुन - रतिनाथ की चाची - पृ.१६।

रतिनाथ की नानी एक बड़े ही भद्र और कुलीन ब्राह्मण की संतान थी माँ बाप की तीसरी बेटी। बचपन में ही उसके माँ-बाप मर गए। चाचा ने तीन सौ में बेचारी को पाठकों के कुल में बेच डाला।' [१] नागार्जुन नारी के क्रय-विक्रय में दो प्रमुख कारणों पर प्रकाश डालते है - एक आर्थिक और दूसरा सामाजिक। जिसमें क्रमशः पहले में लोगों की निर्धनता और धन-प्राप्ति की लालसा निहित है तो दूसरी में - मैथिल ब्राह्मण समाज की दम्भी और अहंकारी कुलीनता का चरित्र है। इस संदर्भ में तेजसिंह का मत है 'मिथिला ब्राह्मणों की कुलीनता बनाम आभिज्यात्य विनिमय, क्रय-विक्रय आदि का प्रामाणिक इतिहास सौराठ, की सभा में 'घटकराज' और 'पंजीकार' की बहियों में सुरक्षित है और फिर ये घटकराज और पंजीकार भी वर-वधु से उनके सामर्थ्य के अनुसार धन वसूल करते हैं। स्वयं गौरी के बेटे उमानाथ ने 'दो सौ रुपये' देकर अपने लिए कन्या की तलाश इन्हीं पंजीकारों द्वारा करायी है।' [२]

इस प्रकार हम देखते है कि नारी विक्रय की समस्या को नागार्जुन ने यथार्थ रूप में आँका है और उस समय के समाज की मनोवृत्ति को प्रदर्शित किया है।

(४) नारी द्वारा नारी की उपेक्षा --

एक नारी को झूठा, बूरा साबित करने के लिए नारी ही अधिकतर आगे आती है क्योंकि इससे उसके अहं की तुष्टि होती है। जब किसी नारी का पैर फिसल जाता है तो उसे और अपमानित, निंदित करनेवाली कोई नारी ही होती है। इसी तथ्य को नागार्जुन ने 'रतिनाथ की चाची' उपन्यास में दर्शाया है। डा. ज्ञान अस्थाना जी कहते हैं -- 'स्त्रियों का, विशेष कर ग्रामीण स्त्रियों का स्वभाव होना है कि वे एक दूसरे को नीचा दिखाने का अवसर ढूँढ़ती रहती हैं। कोई छोटी सी भी बात क्यों न हो यदि गाँव की एक स्त्री को

---

१ नागार्जुन - रतिनाथ की चाची - पृ.१२९।

२ तेजसिंह - नागार्जुन का कथा साहित्य - पृ.६६।

मालूम हुई तो गाँव तमाम में फैल जाती है। गौरी के कलंक की बात भी इसी प्रकार फैलने में देर न लगी। गाँव की स्त्रियाँ सजातीय होने पर भी गौरी के साथ सहानुभूति प्रदर्शित करने अथवा किसी प्रकार की सहायता देने की अपेक्षा उसका मजाल ही उड़ाती हैं। वे यह नहीं सोचती कि भूल-चूक, पाप-अपराध मनुष्य से ही होता है, यदि गौरी से भी कोई पाप हो गया, तो उसे तिल का ताड़ बनाने की क्या आवश्यकता है। किन्तु अपढ़ स्त्रियाँ बात पचाने में प्राय: अशक्त सिद्ध होती हैं। गौरी का बहिष्कार कर वे अपना बड़प्पन जताने का प्रयत्न करती हैं।' [१]

इन सब में बाल विधवा होकर भी जीवन की बहारें लूट चुकी कूटनीतिज्ञ दमयन्ती सबसे आगे है। वह सिर्फ गौरी को बहिष्कृत कर ही नहीं सकती वह उसके बेटे उमानाथ को भी भड़का देती है और आजीवन उन दोनों में वितुष्ट आ जाता है।

'उपन्यासकार नागार्जुन' नामक पुस्तक में बाबूराम गुप्त नारी की दयनीयता के बारे में कहते हैं 'यही है भारतीय समाज में जड़ जमाये हुए वैषम्य का प्रतिफलन कि पुरुष वर्ग तो पुरुष वर्ग, नारी समाज भी नारी के प्रति कितना असंवेदनशील, निर्दय और क्रूर हो गया है।' [२]

गौरी जब अपने मायके चली जाती है तो वहाँ भी उसे वहाँ की स्त्रियाँ इसी तरह उपेक्षा की दृष्टि से देखती है। वहाँ वे उसे बार-बार सवाल करती हैं, उसेपीड़ित करती है तो गौरी चिढ़ जाती है। वह मन-ही-मन कहती है --
'ओ अभागी औरतों! मुझे क्या हो गया है यह तुम भली-भाँति जानती हो। तुम्हें रत्ती-रत्ती पता है कि इस तरह का चेहरा एक स्त्री का कब होता है। इस तरह की झेंप, इस तरह का संकोच किसी विधवा की मुखाकृति पर कब छाया रहता है, यह भी तुम भली-भाँति जानती हो। फिर क्यों मेरा दिमाग चाटने आयी हो? तुम्हें जिसका खटका है, उसी दुर्भाग्य का मैं शिकार हूँ। मेरी नियति के साथ क्यों मखौल करने आई हो?' [३]

---

१ डा. ज्ञान अस्थाना - हिन्दी उपन्यासों में ग्राम समस्याएँ - पृ. २०० ।
२ बाबूराम गुप्त - उपन्यासकार नागार्जुन - पृ. ७९ ।
३ नागार्जुन - रतिनाथ की चाची - पृ. ३६ ।

इस प्रकार नारी ही के द्वारा नारी की उपेक्षा समाज किस तरह करता है,इसका चित्रण नागार्जुन ने किया है । उन्होंने दमयन्ती जैसे पात्र का निर्माण कर यह बताया है कि समाज में ऐसी कूटनीतिज्ञ महिलाएँ भी होती है जो न स्वयं चैन से जीती हे न दूसरों को चैन से जीने देती है । वे यह बात भूल ही जाती है कि वे स्वयं भी एक नारी है । वे इस बात पर विचार ही नहीं करती कि अगर उन्हें भी इसी हालात से गुजरना पड़ता तो वे क्या करती, और नारी ही के द्वारा नारी की उपेक्षा हो जाती है ।

(५) <u>यौन-समस्या</u> --

आलोच्य उपन्यास में यौन समस्या का भी चित्रण हमें दिखाई देता है । यौन समस्या के संदर्भ में डा.कमला गुप्ता का कथन है कि ' मनुष्य के जीवन में यौन एक गहन एवं शाश्वत आवश्यकता है । यह एक भूख है, जिसकी तृप्ति प्रेम में, शारीरिक सम्बन्धो के निर्वाह में होती है । किन्तु अवैध रूप से यौन परितृप्ति यौन विकृति कहलाती है । ग्रामीण परिवेश प्रकृति तथा पशु पक्षियों का खुला रंग स्थानहे, जहाँ वे बिना रोक - टोक अपनी यौन आवश्यकताओं की पूर्ति कर तृप्ति पाते है किन्तु मानवीय जीवन के सन्दर्भ में इस पर सामाजिक रीतियों एवं परम्पराओं के कपाट लगे है । [१]

' सामन्ती युग वैभव और विलाश्रिता का युग रहा है । धन का प्राचुर्य यों भी अनेक सामाजिक बुराइयों को जन्म देता है । सामन्तो ने तो विलासिता और कामुकता के क्षेत्र में सर्वथा नवीन मानदंड प्रस्तुत किये है एवं सर्वथा नवीन क्षेत्रों का उद्घाटन किया । इसके लिए उन्होंने अनेक विवाह किये एवं नैतिक - अनैतिक अनेक साधनों से कामुकता की परितृप्ति में लगे रहे,अवैध यौन सम्बन्ध स्थापित किये,नव विवाहिताओं को भोगने के लिए नवीन नियमों की उद्भावना की । सामन्ती जीवन की इस घोर विलासिता से जन जीवन प्रभावित हुआ ।

---

१ डा.कमला गुप्ता - हिन्दी उपन्यासों में सामन्तवाद - पृ.४०७ ।

आत्महत्याओं, भ्रूण हत्याओं एवं अन्यान्य रूपों में अपराधों की श्रृंखला का जन्म हुआ। नारी वर्ग अनैतिकताओं एवं कुंठाओं का शिकार बन गया। सामन्तों के उपरान्त भी यह अनैतिकता समाज को ग्रसे हुए है। ग्राम्य जीवन एवं अंचल विशिष्ट की अपनी प्रथाएँ एवं परम्पराएँ है जो यौन सम्बन्धों को सामाजिक परिवेश के साथ क्रियाशील रखती है।[१]

यौन समस्या के बारे मेंडा. ज्ञानचन्द गुप्त का कथन है कि --'फैशन की दौड-धूप शहरी सभ्यता के संक्रमण एवं जीवन - मूल्यों की टूटन से यौन - सम्बन्धी नैतिकता के नये प्रतिमान उभर रहे हैं। तथा ग्रामीण धरा पर यौन - चेतना की मुखर अभिव्यक्ति हो रही है।'[२]

अवैध यौन सम्बन्धों की समस्या 'रतिनाथ की चाची' में भी उठाई गयी है। रतिनाथ की चाची 'गौरी' अपने विधुर देवर जयनाथ की कामातुर इच्छाओं का शिकार बनकर गर्भवती हो जाती है एवं वैधव्य का अभिशाप झेलती है। समाज के व्यंग्य बाणों का निशाना बनती है किन्तु जयनाथ के लिए एक भी अपशब्द नहीं कहती। जयनाथ रतिनाथ की चाची को किस तरह परेशान करते थे इसका चित्रण करते हुए नागार्जुन कहते है --

'रात को सोना चाची के लिए हराम हो गया था। वे रत्ती को बराबर अपने नजदीक सुलातीं, फिर भी जयनाथ नहीं मानते। खा-पी चुकने पर कहानियाँ सुनते या गप करते जब रत्ती सो जाता तो किसी न किसी बहाने जयनाथ चाची के पास आ बैठते। वे बेचारी भी सँभलकर उठ बैठती। उनका रोम-रोम जागरूक प्रहरी बन जाता। जयनाथ का हाथ बहकता तो चाची उसे पकडकर आहिस्ते से हटा देती। वासना के उद्रेक से जयनाथ की जीभ लड़खड़ाने लगती तो ये फूर्ति से उठकर बीच आँगन में आ जाती।'[३]

---

१ डा. कमला गुप्ता - हिन्दी उपन्यासों में सामन्तवाद - पृ. ४०८।

२ डा. ज्ञानचन्द गुप्त- स्वातन्त्रोत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम चेतना - पृ. ११२।

३ नागार्जुन - रतिनाथ की चाची - पृ. ८९-९०।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY. KOLHAPUR
SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

'रतिनाथ की चाची' इस उपन्यास का पात्र जयनाथ का अपनी बहन सावित्री की बाल-विधवा देवरानी से भी अवैध सम्बन्ध है और इन्द्रमणि की दोनों लडकियाँ - जनक किशोरी एवं शकुन्तला का अपने चचेरे भाई एवं कुल्ली राऊत से अवैध सम्बन्ध है और उनसे उन्हें सन्तान भी प्राप्त हुई है।

(६) <u>शिक्षा समस्या</u> --

नागार्जुन ने अपनी कृतियों में गाँवों में व्याप्त बेकारी और निर्धनता का मार्मिक चित्रण कर दिया है। इसके साथ ही साथ शिक्षा के कुछ पहलुओं पर भी अपने विचार प्रकट किये हैं। रतिनाथ की चाची में जयदेव मिश्र एक ज्योतिषी का बडा लड़का हरिदेव पटना कॉलेज में प्रोफेसर और छोटा भवदेव एम.एस.सी. मे सर्वप्रथम आकर आज कल कोई अनुसंधान कर रहा है। इस स्थिति को दर्शाते हुए लेखक ने यह दिखाया है कि जो भी नवयुवक उच्च शिक्षा पा लेता है, गाँव में रहना ही नहीं चाहता। जब कभी वे कभी कभार घर आ जाते है तो घर में मेहमानों की तरह रहते है। इन शिक्षित नवयुवकों की स्थिति को नागार्जुन ने दर्शाया है।

वर्ण व्यवस्था के कारण शिक्षा की समस्यायें निर्माण होती थी। उच्च वर्गीय लोग शिक्षा लेना अपना धर्म समझते थे। निम्न स्तर के लोगों का शिक्षा ग्रहण करना अपराध समझा जाता था। शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार वर्ण-व्यवस्था के अन्तर्गत ब्राह्मण जाति ने अपने पास ही रखा किसी भी शूद्र को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं था। शूद्र जाति का व्यक्ति संस्कृत के स्तोत्र याद नहीं कर सकता। रतिनाथ की चाची, उपन्यास का कुल्ली राऊत, जो अब सत्तर साल का है, उसकी बातचीत, रंग ढंग और बनाव देखाव ऐसा था कि अपरिचित लोगों को भ्रम हो जाता है कि यह ऊँची जाति का कोई आदमी है। उसे संस्कृत के कई स्तोत्र याद थे। जनेऊ का मंत्र भी वह जानता था और गायत्री भी उसे आती थी। लेकिन जब रतिनाथ के पिता यह जान जाते हैं तो वे गुस्से में आकर उसकी चमडी उधेडने की बात करते है और साथ ही उसे धमकाते भी है कि अगर वह शूद्र है तो उसने शूद्र की भाँति रहना चाहिए।

रतिनाथ सोचता है कि यह कुली राऊत अगर यह भी ब्राह्मण परिवार में पैदा हुआ होता तो आज उसकी यह स्थिति नहीं हुई होती। स्वयं नागार्जुन ने भी ब्राह्मण बिरादरी से समझौता नहीं किया वर्ना आज वे बिहार के किसी गाँव में पुरोहित होते ।

इस उपन्यास में शिक्षा के एक अन्य रूप को भी दर्शाया है और वह है अंग्रेजी शिक्षा । अंग्रेजी शिक्षा के प्रति भी देहातों में गलत धारणा थी । अंग्रेजी शिक्षा पालेना पाप समझते थे। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त स्त्री से विवाह करना उससे भी महापाप मानते थे। शुभंकरपुर के ज्योतिषी का पुत्र भवदेव,जो एम.एस.सी.था और कुछ अनुसंधान का कार्य कर रहा था,उसने पश्चिम बंगाल के दिनाजपुर में रहनेवाले मैथिली ब्राह्मण परिवार की एक शिक्षित लड़की से विवाह कर लिया था । इसलिए शुभंकरपुर के सभी पुरोहित और पंडित उसपर बहिष्कार जाहिर करते है। 'लोगों ने कहने शुरु किया - बंगाली की लड़की से जयदेव ने अपने लड़के की शादी करा दो । बाप किरिस्तान है और अण्डा खाता है, बाल बच्चे समेत गिरिजा जाता है।'[१] और इससे ब्याह कर भवदेव ने धर्म भ्रष्ट कर दिया है इसलिये इसके घर का अन्न जल खाना बंद । प्रायश्चित की बात वह नहीं मानता । उमानाथ की माँ चाहकर भी जयदेव को अशिक्षा के कारण चिठ्ठी नहीं लिख पाती और इंतजार करती रहती है ।

इस प्रकार नागार्जुन ने शिक्षा के अलग - अलग रूपों को दिखाकर शिक्षा की समस्यापर प्रकाश डाला है। अधिक शिक्षा प्राप्त करना भी कभी-कभी गाँव में बुरा माना जाता है। अशिक्षा के कारण लोगों में कई तरह की गलत धारणाएँ निर्माण होती हैं। इसलिये आज शिक्षा एक समस्या बनकर रह गयी है। अंग्रेजी शिक्षा के प्राबल्य के कारण गुरुकुल परंपरा प्राय: नष्ट सी होती जा रही है। साथ ही गुरुकुल में जाकर पढने की छात्रों की रुचि भी नहीं होती ,इस बात को भी नागार्जुन ने अपने उपन्यास में दर्शाया है।

---

१ नागार्जुन - रतिनाथ की चाची - पृ.७८ ।

(७) अंधश्रद्धा ,कुरीतियाँ --

भारतीय ग्रामीण समाज में आज भी कई तरह की कुरीतियाँ,रूढि, परंपराएँ,अंधश्रद्धाएँ ,अंधविश्वास पाया जाता है। ग्रामीण समाज में प्रचलित इन रूढि परंपराओं के पीछे अधिकतर लोगों का अंधविश्वास ही पायाजाता है। आज भी अगर किसी काम के लिए कोई निकल पड़े और उसके सामने से बिल्ली गुजर जाए तो वह आदमी दो कदम पीछे हट जाता है। आधुनिक काल में अगर यह स्थिति है तो जब यह उपन्यास लिखा गया उस वक्त का समाज कितना पिछड़ा होगा, यह तो सिर्फ विचार करने की बात है।

'भारतीय ग्राम-चेतना अपनी प्रकृति और परिवेश में अन्यान्य अज्ञानजनित भूत-प्रेम सम्बन्धी प्रकल्पनाओं को समाहित किए हुए है। नागार्जुन के उपन्यास रतिनाथ की चाची में ग्राम के शंकरबाबा रतिनाथ के साथ बैलगाडी तक में नहीं बैठते और गाडी के साथ साथ पैदल चलते हैं। रतिनाथ यह सब देखकर बड़ा आश्चर्यचकित होता है। कई बार कहने पर जब वे नहीं बैठते तो आखिर वह इसका कारण पूछ ही लेना है। शंकरबाबा के उत्तर में उनकी पोंगापन्थिता और प्राचीन परम्पराओं के प्रति पूर्वाग्रह व्यक्त होता है।'[१]

नागार्जुन ने देहात में होनेवाले एक और परंपरा के बारे में बताया है कि देहातों में आग एक घर से माँगकर दूसरा घरवाला ले जाता है,दूसरे से तीसरा। यों दियासलाई का काम ही नहीं पड़ता। इस देहाती परंपरा से इनकी एकता का पता हमें चलता है।

शुभंकरपुर गांव में जब मैथिल ब्राह्मण परिवारों में ब्याह तय होते थे तो सौराठ की सभा में तय होते थे। उमानाथ की शादी भी इसी सौराठ की सभा में तय हुई थी। यह विराट पर्व न केवल भारत भर में परंतु संपूर्ण विश्व में अद्वितीय कहलाता था। सभी ओर सौराठ की यह विवाह सभा मशहूर हो गयी थी। उमानाथ के ब्याह में औरतों का उसे गहरी निगाह से देखना,जाँचना-

---

१ डा.ज्ञानचन्द गुप्त - स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम चेतना - पृ.२०३।

परसना और कन्यादान आदि विवाह विधियों का नागार्जुन ने अत्यंत सफलता के साथ वर्णन किया है। लड़की की मुँह दिखाई में उसे पैसे दिये जाना, इस रिवाज का हमें यहाँ पता चलता है।

इस प्रकार शुभंकरपुर गाँव और मिथिलांचल में प्रचलित कई रूढ़ि, परंपराओं का, रिति-रिवाजों का, अंधश्रद्धा, अंधविश्वासों का चित्रण नागार्जुन ने अत्यंत सफलता के साथ किया है। उनके उपन्यास रतिनाथ कीचाची की आंचलिकता ही मानो इससेस्पष्ट हो जाती है। मिथिलांचल के लोगों की मनोवृत्ति का पता भी हमें इसी से चलता है।

(८) धार्मिक शोषण --

ग्रामीण समाज में लोगों की अंधश्रद्धाओं का अशिक्षा का फायदा उठाकर ब्राह्मण सामान्य जनता का शोषण किस प्रकार किया करते थे इस बात का विश्लेषण नागार्जुन ने अपने उपन्यास में किया है। ब्राह्मणों का धर्म आज-कल मात्र दिखावा बनकर रह गया है। वे उससे अपने स्वार्थ को साध लेने का काम किया करते हैं। यही बात सामाजिक विषमता और विकृतियों के लिए पोषक बनती है।

'रतिनाथ की चाची' में जब रतिनाथ और कुली राऊत तरकुलवा जा रहे थे तो मार्ग में पड़े तालाब के किनारे रतिनाथ जल्दी-जल्दी संध्या करता है तो राऊत उससे पूछता है कि, नीलमाधव के वंशधर होकर भी तुम इतनी जल्दी क्यों कर रहे हो। रतिनाथ उसपर कहता है कि, यहाँ कोई देखनेवाला नहीं है और जब वह तरकुलवा पहुँचेगा तो घंटाभर नाक बंद किए बैठा रहेगा। राऊत उसकी इस बात पर हँस देता है। और वह बाप के गुण सीख आया है ऐसा उसे कहता है। रतिनाथ सोचने पर मजबूर हो जाता है। राऊत ने चोरी छुपे गायत्री मंत्र तक सीख लिया था। रतिनाथ सोचता है कि अगर राऊत का जन्म ब्राह्मण परिवार में हुआ होता तो उसे यों दूसरों के टूकडों पर पलना नहीं पड़ता।

इसी उपन्यास में तारा साधू जयनाथ को गौरी का गर्भ गिराने के लिये पंचाक्षार मंत्र दे देता है। समाज या धर्म किस हद तक पतन की राह पर जा रहा है यही इस बात से स्पष्ट हो जाता है।

' वर्णाश्रम धर्म के अनुसार ब्राह्मण समाज में सबसे उच्च समझे जाते थे। वे दया, धर्म, परोपकार आदि गुणों से संपन्न होते थे। लेकिन धार्मिक रुढियों के विकास के साथ ही ब्राह्मणों में इन गुणो का लोप होता चला गया। धार्मिक रुढियों और अंधविश्वासों को इस वर्ग ने सर्वाधिक प्रश्रय दिया। जिस समाज में धर्म की आड लेकर एक वर्ग अन्य वर्गों का शोषण करता है, उसके विकास में अवरोध होना निश्चित एवं अवश्यभावी है।' [१]

तारबाबा भोला पंडित को ' ब्रह्मपिशाच' मानता है। भोला पंडित नियमित रूप से दुर्गासप्तशती का मन-ही-मन पारायण करता है। जीभ से नामोच्चारण और हाथ से काम दोनों साथ-साथ चलते है और कोई इसी बीच निमंत्रण देने आ जाए तो पाठ छोडकर ' दोड..दोड.. ढेढ' (कौन-कौन रहेगा) इस तरह अव्यक्त ध्वनियों में प्रश्न पूछ लेते है। इससे उनकी पूजा में कोई बाधा नहीं पहुँचती।

नागार्जुन कहते है कि समाज उन्हीं को दबाता है, जो गरीब होते है। शास्त्रकार लोगों को भी बलि के बकरे नजर आते है। आज तक बाघ और भालू का बलिदान किसी को भी नहीं सूझा।

' इसी बात का परिचायक है कि शास्त्रों के रचयिताओं ने भी धर्म के नाम पर समाज के गरीब लोगों का ही शोषण किया है। पंडितों के हाथ में धर्म किसानों का शोषण करने के लिए एक शस्त्र बन गया है और वे इसकी आड में निरीह लोगों का शोषण करते है।' [२]

---

१ बाबूराम गुप्त - उपन्यासकार नागार्जुन - पृ.९८।

२ वही पृ.१३८।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

इस उपन्यास में इन धार्मिक पाखंडों और अंधविश्वासों का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। संस्कृत पाठशाला के पंडितजी को राजाबहादुर से धन की प्राप्ति करने के लिए वे हमेशा पूजा के अंत में पंडित राजा बहादुर का गुणगान कर पैसा बटोरने का काम करते थे। पूँजीपति वर्ग का प्रतिनिधि दुर्गानंदनसिंह अपनी माँ के श्राद्ध के अवसर पर महामहोपाध्यायधारी सभी पंडितों को बुलाकर एवं उन्हें एक सौ रूपये की बिदाई और आने-जाने का सेकंड क्लास का खर्च देकर धर्म दिवाकर की उपाधि प्राप्त करते है।

जयदेव मिश्र के लड़कों के विवाह के संबंध में जब गाँव में धर्म के नाम पर विरोध होता है तब वे भोला पंडित को एक जोड़ा महीन धोती और चांदी के सौ रूपये देकर सारा मामला ठीक कर देते है। जब किसान आंदोलन में एक ब्राह्मण की हत्या का पाप जमींदार के सिर पर पड़ने लगता है तो वह केसरी वयोवृद्ध पंडित बुच्चन पाठक की कृपा से दस-बारह रूपये के प्रायश्चित में सब ठीक-ठाक हो जाता है।

इस प्रकार हम पाते है कि धर्म और समाज के रक्षा का भार जिन पर है वे स्वयं किसानों का खून चूस रहे है। ईश्वर को माध्यम बनाकर वे अन्याय, अत्याचार कर रहे है। ब्राह्मण की हत्या को छूत की बीमारी की तरह मानकर, उससे उत्पन्न पाप सभी को लगेगा ऐसा सोचनेवाले ये पिछड़ी विचारधारा के लोग है और उसी का फायदा उठाकर इन गरीबों का शोषण करनेवाले ये धर्म के ठेकेदार धर्म के नाम पर अन्याय,अत्याचार करते रहते है।

(९) पुरुष निष्ठुरता --

पुरुष वर्ग की निष्ठुरता तो सभी के द्वारा मान्य कर ली गयी है। इसी समस्या को नागार्जुन ने भी अपने उपन्यास रतिनाथ की चाची में भी दर्शाया है। उमानाथ की माँ जयनाथ का इंतजार कर रही है। उसपर आयी विपत्ति वह उसे बताना चाहती है परंतु 'जयनाथ वादा कर गये थे कि दस दिन में ही मै बाबा (वैद्यनाथ) को जल ढालकर आ रहा हूँ। पूस चढते गए और यह चैत भी बारह

दिन बीत गया। चाची को सारी पुरुष जाति से घृणा हो गई ... इस मुसीबत का सामना जिसे करना चाहिए,वह कहीं यो बाबा वैद्यनाथ और काशी विश्वनाथ के इर्द-गिर्द गाल बजाता फिरे ?' [१]

जयनाथ इतने निष्ठुर ,निर्दयी होकर कहीं चले गये है और बेचारी गौरी सारी परेशानियों को झेल रही है।

कभी कभी पुरुष इतना क्रूर हो जाता है कि वह कुछ भी करने के लिए तैयार हो जाता है। रतिनाथ को बार-बार याद आता है --

'रतिनाथ की बीमार माँ बिस्तरे पर उतान लेटी पड़ी है। और जयनाथ रुद्र रूप धरकर बेचारी की छाती पर बैठा है। हाथ में कुल्हाडो है और वह अपनी स्त्री की गर्दन रेतता जा रहा है। वह घिघिया रही है, लेकिन कोई भी इस नरमेघ में हस्तक्षेप करनेवाला वहाँ मौजूद नहीं है ....' [२]

जब उमानाथ को अपनी माँ की गलती का दमयन्ती द्वारा पता चलता है तो उसका गुस्सा बेकाबू हो जाता है। घर आते ही वह माँ पर गालियों और लातों की बरसात शुरु कर देता है, यहाँ तक कि सारा समाज जब उसकी माँ को गलती को माफ कर देता है,तब भी वह अपनी माँ को माफ नहीं कर सका। वह इतना निष्ठुर बन जाता है कि जब उसकी माँ शादी के लिये उसे बचाकर पैसे दे देती है। तब वह दूसरों के द्वारा भड़काये जाने के कारण माँ पर गुस्सा उतारता है। गौरी की मौत के बाद वह अंतिम संस्कार के लिए भी ज्यादा खर्चा नहीं करता।

इस प्रकार पुरुषों की निष्ठुरता भी कैसे एक समस्या बनकर रह गयी है, इसका अत्यंत सार्थक,यथार्थ चित्रण नागार्जुन ने किया है। पुरुषों की यह निष्ठुरता नारी के जीवन को कितना दु:खी बना देती है, उसे कितनी पीड़ित करती है यह बात इसमें दर्शायी गयी है।

---

१ नागार्जुन - रतिनाथ की चाची - पृ.१२।

२ वही पृ.२९।

(१०) महाजनी शोषण --

रतिनाथ की चाची में वर्णित उच्च वर्ग में आम तौर पर जमींदार और पूँजीपति आते है। उनके अन्याय,अत्याचार देखकर ऐसा महसूस होता है कि यह वर्ग बिलकूल निठल्ला वर्ग है। यह स्वयं किसी भी प्रकार का काम या श्रम नहीं करता और विलास में डूबा रहता है।

इस उपन्यास में शुभंकरपुर गाँव के मालिक राजाबहादुर दुर्गानंदन सिंह के पिता ने गाँव में जो पोखर खुदवाया था,उससे अब उन्हें अपने गाँव के मल्लाह से मछली के ठेके से दो हजार रूपये कर के रूप में हर साल मिल जाते थे।

'जमींदार वर्ग किसान काश्तकार और खेतिहर मजदूरों की भूमि लगान के रूप में प्रत्यक्ष शोषण करते थे मगर अब प्रत्यक्ष रूप में सूदखोरी के द्वारा करते है। तरीका बदल गया है। रायबहादुर दुर्गानंदनसिंह बड़े जमींदार थे,साथ-ही साथ आसपास के पच्चीसों गाँवों में उनका ब्याज पर पैसा चलता है। यह पूँजी तीन लाख की डेढ रूपये सैंकड़ा प्रतिमास की दर से ब्याज आता हैं। सूद भी मूल बन जाता है। चक्रवृद्धि का यह क्रम राजाबहादुर के शरीर वृद्धि के लिए रसायन का काम कर रहा था। हवेली में नकद रूपये रखने के लिए उन्हें चहबच्चा बनाना पड़ा था। माँ के श्राद्ध का ढोंग करते है और पंडितों की सभा बुलाकर धर्म दिखाकर की गौरवपूर्ण उपाधि से सुशोभित होते है।'[१]

इस अन्याय,अत्याचार को सहनेवाला किसान वर्ग जागृत हो जाता है। वे अपने शत्रु को पहचानने लगते है और वे संगठित होने लगते है। वे नारा लगाते है कि 'कमानेवाला खाएगा,इसके चलते जो कुछ हो।' यही चेतना शुभंकरपुर गाँव में भी आ गयी। जब उन्हें संगठन का पता चला,वे भी आगे आये।

नागार्जुन गाँव के किसानों के जातिगत नहीं,उनके वर्गीय आधार को पहचानते है और शुभंकरपुर गांव में वर्गीय चरित्रों को साफ-साफ देख रहे है कि

---

१ तेजसिंह - नागार्जुन का कथा साहित्य - पृ.८० ।

ब्राह्मणों में इस बात को लेकर दो दल हो गये। एक दल जमींदारों की ओर था, दूसरा किसानों की ओर था। जो लोग जमींदारों की ओर थे, वे खूब नफे में रहे। आन्दोलन की बातें इस तरह बढा बढाकर राजाबहादुर के कानों में डाली गयी कि वे बदहवास हो गये। बढ़िया से बढ़िया धनहर खेत सौ या पचास रुपये फी बीघा लुटाने लगे। यह सब किसान आन्दोलन का प्रभाव था और उससे डरकर जमींदारों ने अपनी जमीनें सस्ते में बेचनी शुरु कर दी थी। फिर भी किसान बित्ताभर जमीन छोडने को तैयार नहीं थे।[१]

रतिनाथ की चाची में किसान, जमींदार का संघर्ष जमींदारों द्वारा किसानों को बेदखल करने से निर्माण होता है। असंतुष्ट किसानों का संगठन 'किसान कुटी' के नाम से होता है। किसान जमींदारों से मोर्चा लेते हैं और किसानों का नेता ताराचरण जमींदार से मान्य कर लेता है कि खेत किसानों की जनक में लगे है।

सन १९३७ का कांग्रेसी जमाना आ गया और जब जमींदार चुनावों में हार गये तो पैंतरे बदल कर उन्होंने कांग्रेसी मंत्रियों को धमकाना शुरु किया -- 'आपका, खादी का कुर्ता पहले हम अपने खून से - तर कर देंगे, उसके बाद जाकर जमींदारी प्रथा उठा दीजिएगा।'[२]

मंत्रियों ने भी किसानों की ओर पीठ कर दी और जमींदारों की ओर मुँह कर दिया। सारी दुनिया में उनकी बदनामी फैल गयी कि --'बिहार कांग्रेस पर जमींदारों का असर है। जवाहरलाल तक ने खुल्लम खुल्ला यह बात कही।'[३]

इस प्रकार महाजनों, पूँजीपतियों के शोषण का चित्रण नागार्जुन ने यथार्थवादी ढंग से किया है। इसके साथ ही सन १९३७ के बाद महाजनी प्रथा या जमींदारी प्रथा का उन्मुलन किस तरह हुआ है, इस बात का चित्रण नागार्जुन ने किया है।

---

१ तेजसिंह - नागार्जुन का कथासाहित्य - पृ.१०१।

२ नागार्जुन - रतिनाथ की चाची - पृ.८४।

३ वही - पृ.८४-८५

(११) वर्ग-संघर्ष की समस्या --

समाज में व्याप्त सभी प्रकार के संघर्षों की जड़ वर्ग-संघर्ष होती है। अगर समाज में अलग अलग प्रकार के वर्ग ही न हो तो संघर्ष छिड़ ही नहीं सकता और न ही किसी के द्वारा किसी का शोषण होगा न कोई शोषित होगा। यह वर्ग संघर्ष ही समाज में होनेवाले हर एक संघर्ष का कारण बनता है। इसी की वजह से किसी एक को मौका मिलता है कि वह दूसरे का शोषण करे। नागार्जुन ने अपने उपन्यास रतिनाथ की चाची में वर्ग - संघर्ष में महाजन या पूंजीपतियों का वर्ग और खेतीहर किसान इन दो वर्गों को ही प्रमुखतम रूप में लिया है। मध्यवर्ग का चित्रण यदा कदा हो हुआ है।

' रतिनाथ की चाची ' में नागार्जुन ने वर्ग संघर्ष का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है। उपन्यासकार ने शुभंकरपुर गाँव और आस पास के कृषकों में पनपती हुई वर्ग संघर्ष की भावना का चित्रण करते हुए जमींदारों द्वारा उनका शोषण, कृषकों की जागरूकता का प्रतीक उनका नारा, कमानेवाला खायेगा, इसके चलते जो कुट हो आदि को भी अभिव्यक्ति प्रदान की है। '[१]

किसानों और जमींदारों के संघर्ष में किसानों ने एक होकर किसान कुटी बना दी। सभी ने चंदा देकर सहयोग दिया। रतिनाथ की चाची भी पीछे न रही। उसने कहा - ये दस का काम है। देश का काम है। गरीबों का यज्ञ है। मेरे पास है ही क्या, जो दूंगी। उसने अपना दो साल पुराना कम्बल भेंट दे दिया। आंदोलन जोरों पर चल रहा है। नागार्जुन ने स्वयं इसमें सर्वहारा वर्ग के संयुक्त मोर्चे का समर्थन किया है।

' नागार्जुन का सीधा सम्बन्ध निम्न मध्यवर्ग और निम्नवर्ग से रहा है। किसान निम्न मध्यवर्ग के अंतर्गत आते है और खेतिहर मजदूर व अन्य निम्न मध्यवर्ग के अंतर्गत। नागार्जुन प्रगतिशील चेतना संपन्न कथाकार है, जिसने गाँव में सामन्त -

---

१ बाबूराम गुप्त - उपन्यासकार नागार्जुन - पृ.१६२।

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

जमींदार-सूदखोर, महाजनों के द्वारा किसान मजदूर पर किये गये अत्याचारों, शोषण और अन्याय को प्रत्यक्ष रूप में देखा है।' [१]

कुल्ली राऊत जैसे लोगों का जीवन पूरी तरह से बड़ी जातिवालों की मेहरबानी पर निर्भर है। एक प्रगतिशील जनवादी लेखक ही ऐसा सोच सकता है और किसान, मजदूरों के प्रति सद्भाव दिखा सकता है। उच्च वर्ग के अन्याय और शोषण के विरुद्ध उन्हें संघर्ष का रास्ता दिखा सकता है।

वर्गसंघर्ष के साथ-ही-साथ नागार्जुन ने जाति-भेद को भी अपने उपन्यास में दर्शाया है। जयदेव के भाई भवदेव की शादी जब एक बंगाली लड़की से हो जाती है तो लोग तूफान खड़ा कर देते हैं। कहते है --

'बंगाली की लड़की से जयदेव ने अपने लड़के की शादी करा दी। लड़की का बाप किरिस्तानी है और अण्डा खाता है। बाल-बच्चो समेत इतवार के दिन गिरजा जाता है। [२]

इस प्रकार हम देखते हैं कि नागार्जुन ने जिन परिस्थितियों को स्वयं भोगा था, वर्गसंघर्ष की जिन समस्या को महसूस किया, उसी समस्या को अपने इस उपन्यास में चित्रित किया है। इस समस्या के समाधान की ओर भी किसान आंदोलन के माध्यम से उन्होंने कदम बढाये है और किसानों को उसके प्रति जागृत करने का कार्य किया है।

(१२) अछूत समस्या --

वर्णाश्रम व्यवस्था के अंतर्गत अपने आप को धर्म के ठेकेदार माननेवाले इन ब्राह्मणों ने अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए कम दर्जे का काम करनेवालों को अछूत मानते हुए उन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया। पूरी तरह से शिक्षा, धार्मिक कार्य आदि सभी उन्होंने हथिया लिया और उन निम्न वर्ग के लोगों की छाया तक को छूना पाप माना। उन्हें धर्मग्रंथ पढने का, सुनने का अधिकार न रहा। उन्होंने

१ तेजसिंह - नागार्जुन का कथा साहित्य - पृ.८५।

२ नागार्जुन - रतिनाथ की चाची पृ.७८।

KOLHAPUR

अगर यह काम गलती से भी किया तो कड़ी से कड़ी सजा दे दी जाती थी । उन्हें मंदिरों में प्रवेश निषिद्ध था । पनघट पर पानी भरने का भी अधिकार उन्हें नहीं था । ऐसे ही अछूतों की समस्या को नागार्जुन ने 'रतिनाथ की चाची' में उतारा है ।

प्राचीन काल से वर्ण-व्यवस्था हिंदू समाज की आधारशीला रही है, इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि, समाज की सर्वाधिक सेवा करनेवाला वर्ग पीसता रहा तथा उसे अछूत समझा जाने लगा । समाजपतियों ने अछूतों को मानवीय अधिकारों से वंचित कर दिया । अछूत के साथ बैठकर भोजन करना तो दूर ही रहा, उनके स्पर्श को भी पाप या अपवित्र माना जाने लगा । उन्हें गाँव के बाहर निर्जन स्थान पर रहने के लिए बाध्य बना दिया ।

इन्हीं अछूतों की कुछ समस्याओं को नागार्जुन ने इसमें उठाया है ।

'नागार्जुन अपने परिवेश में व्याप्त अछूत समस्या के दारुण रूप से पूर्ण परिचित थे । उन्होंने इस समस्या का चित्रण यथार्थ स्तर पर किया है । रतिनाथ की चाची, के रतिनाथ का कुल्ली राऊत के बारे में यह सोचना - 'अगर यह भी ब्राह्मण के घर में पैदा हुआ होता तो निश्चय ही इसके बदन पर फटे-पुराने कपड़े न होते । हमारी जूठन खाकर, हमारी पहिरन पहनकर इसके बच्चे न पलते । उन्हें कभी स्कूल पाठशाला जाने का अवसर नहीं मिलता क्या मर्द, क्या औरत इन लोगों का जीवन बड़ी जातिवालों की मेहरबानी पर निर्भर है । सोचते सोचते रतिनाथ का माथा चकराने लगा ' इस बात का द्योतक है कि युगीन समाज इस घातक सामाजिक जहर से किस प्रकार ग्रस्त है । उपन्यासकार ने इस उपन्यास में छुआछूत एवं तत्परिणामस्वरूप जन्मी विभिन्न समस्याओं को रेखांकित किया है ।' [१]

राजाबहादुर ने जब अपने आप को धर्म दिवाकर की उपाधि से अलंकृत किया उस दिन उन्होंने ढ़ेर सी मिठाई बनवाई थी --

---

१ बाबूराम गुप्त - उपन्यासकार नागार्जुन - पृ.१०० ।

'सबके आगे बड़े पत्तलों में मिठाइयोंका ढेर लगा था। जूठन की उन मिठाइयों को जवार के शूद्रों ने कई दिन तक खाया था और आज भी उल्लसित होकर वे राजाबाहादुर का गुणगान कर रहे है।'[१]

इस प्रकार उस समय समाज की यही मनोवृत्ति बन गयी थी कि जो शूद्र व्यक्ति थे वे उच्च वर्ग की जूठन खाकर भी प्रसन्न रहते थे,उनका गुणगान किया करते थे। उन्हें इसमें आपत्ति नहीं होती थी। इसी बात को नागार्जुन ने अपने इस उपन्यास में दर्शाया है। कुल्ली राऊत जैसे अछूत ने जब गायत्री मंत्र और कुछ स्तोत्र सीख लिये तो जयनाथ क्रोधित हो गया। वह चाहता था कि राऊत शूद्र है तो उसे शूद्र की भाँति ही रहना चाहिए।

इस समस्या को उद्घाटित कर उपन्यासकार नागार्जुन यह चाहते है कि इस समस्या का कोई न कोई समाधान निकल आये और वे उन्हें इस ओर प्रवृत्त भी करते हैं। फलस्वरूप कि रतिनाथ भी सोचता है कि अगर राऊत का जन्म ब्राह्मण परिवार में हुआ होता तो अच्छा होता। यह बात उसके वैचारिक प्रौढ़त्व को सिद्ध करती है। इस प्रकार इस समस्या का समाधान करने में अपना अंशिक योगदान नागार्जुन ने दिया है।

(१३) भूकंप,मलेरिया,जैसी प्राकृतिक समस्याएँ --

प्रकृति मनुष्य की सहयोगी है। मनुष्य को जीने के लिए प्रकृति के योगदान की अत्यंत आवश्यकता है। विशेषकर गाँवों में रहनेवाले किसानों को या श्रमिकों को प्रकृति एक बहुत बड़ा सहारा होती है। गाँवों में विशेषकर पीछड़ी जातियों को, निम्न वर्ग को कई समस्याओं से जूझना पड़ता है। अन्य समस्याएँ मानो कम हो रही हो, इसलिये प्राकृतिक समस्याओं से भी उन्हें जूझना पड़ता है। इन समस्याओं से भूकंप,अकाल,बाढ और कई तरह की बिमारियाँ प्रमुख रूप में आती है।

---

१ नागार्जुन - रतिनाथ की चाची - पृ.८४।

नागार्जुन ने अपने उपन्यास 'रतिनाथ की चाची' में भूकंप और मलेरिया, हैजा जैसी बिमारियों का वर्णन किया है। 'नागार्जुन का विचार है कि इन प्राकृतिक प्रकोपों ने गाँवों में किसान, मजदूरों की आर्थिक स्थिति को बहुत ही दयनीय स्थिति में पहुँचा दिया है।'[१]

'रतिनाथ की चाची' में भूकंप(१९३४) के बाद की स्थिति का चित्रण करते हुए नागार्जुन ने लिखा है --

'लोगों का कहना था कि भूकंप (१९३४) के बाद देश की आबोहवा बदल गई है। नदियाँ, तालाब और पोखर उथले हो गये हैं। उपज कम होने लगी है। मलेरिया का प्रकोप बढ़ गया है, अकाल मृत्यु बढ़ गई है। इधर पैदा होनेवाले बच्चे साँवले नजर आते हैं। आमों की फसल अब सात-साल नहीं आती।'[२]

जब शुभंकरपुर में मलेरिया फैल गया तब उसमें छः औरतें पाँच मर्द शिकार हो गये। क्रिया कर्म के लिए ग्यारह ब्राह्मण मिलना मुश्कील हो गया। तीन हजामों में से दो मर गये। लाश उठाकर ले जानेवाला कोई नहीं था। गाँव में बड़ी नदी नहीं थी लेकिन लकड़ियों के सहारे काम चलाया गया और पूरी अमराइयाँ खाली हो गयी। छोटी जात वालों को जीवछ नदी की बाढ ने लाशें बहाने में मदद की क्योंकि उनके पास लकड़ियाँ नहीं थी। कई लोग भागकर दूसरे गावों में चले गये। इन बिमारियों में रतिनाथ की चाची ने सभी की सेवा की और अपने कलंक को धो दिया। सभी के लिये समस्या बनी इस बिमारी ने चाची को अपने कलंक को धोने में सहायता दी।

इस प्रकार नागार्जुन ने इस समस्या को दर्शाकर ग्रामीण जीवन को प्राकृतिक समस्याएँ भी किस कदर पीड़ित करती हैं, इसका चित्रण किया है। प्रकृति भी उन्हें एक पूँजीपति की तरह चूसती रहती है और ग्रामीण समाज त्रस्त हो जाता है।

---

१ बाबूराम गुप्त - उपन्यासकार नागार्जुन - पृ.१३२।

२ नागार्जुन - रतिनाथ की चाची पृ.११२।

(१४) पारिवारिक समस्याएँ --

प्राचीन काल में भारतीय समाज में संयुक्त परिवारों का प्रचलन था । यह परिवार एक मूलभूत सामाजिक संस्था ही थी जिसके द्वारा परिवार के सभी कार्यों का संचलन होता था । व्यक्ति का समाज के साथ सम्बन्ध जोड़ने का माध्यम परिवार होता था ।

संयुक्त परिवार वह है जहाँ रक्त से सम्बन्धित कुछ परिवार सम्मिलित रूप से रहते हों तथा खान-पान और आर्थिक हितों की दृष्टि से वे सम्मिलित रूप से व्यवहार करते हों ।'[१]

आगे चलकर जैसे जैसे महानगरों का निर्माण होता गया लोग उनकी ओर आकर्षित होते गये । औद्योगीकरण बढ़ जाने के कारण नौकरियों के अवसर भी उपलब्ध होते गये । इसी वजह से परिवारों के कई सदस्य नौकरियों के लिए शहरों में आकर बसने लगे । संयुक्त परिवारों में बिखराव आने लगा । फिर भी आज कई जगहों पर संयुक्त परिवार पाये जाते हैं ।

पारिवारिक विघटन की इस समस्या को कई साहित्यकों ने अपनी रचनाओं का विषय बनाया । इन्हीं में से एक नागार्जुन रहें । नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची, उपन्यास में पारिवारिक संबंधों के कई रूपों को चित्रित किया है ।

'पति-पत्नी संबंधों के पश्चात् माता-पिता और संतान-संबंध,पारिवारिक संबंधों में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है । माता-पिता का संतान के साथ खून का रिश्ता होता है और वे इस रिश्ते को निभाने के लिए यथासंभव प्रयत्न ही नहीं बलिदान तक करते हैं । लेकिन शिक्षा और आधुनिकता की अंधभक्ति ने शहरों में और अशिक्षा,अधकचरी शिक्षा तथा महँगाई ने गावों में इस संबंध को काफी हानि पहुँचाई है । ग्रामीण परिवेश में आज 'खून का रिश्ता पानी हो रहा

---

१ डा.कमल गुप्ता - हिंदी उपन्यासों में सामन्तवाद - पृ.३०३ ।

है और पानी का रिश्ता खून।' [१]

नागार्जुन ने रतिनाथ की चाची में संयुक्त परिवार प्रणाली के अंतर्गत दीर्घकाय परिवार का चित्रण किया है। यह परिवार है रतिनाथ के नाना का यह परिवार ६३ सदस्यों का बडा परिवार है। इस परिवार के पारिवारिक सम्बन्धो में मधुरता है। उपन्यास की नायिका गौरी माँ के रूप में सहिष्णुता की मूर्ति है। अपनी गलती के कारण वह सभी की प्रताड़ना का लक्ष्य बन जाती है। वह अपने बेटे के लिए सूत कात-कातकर रुपये इकट्ठा करती है लेकिन जैसे ही उमानाथ को अपनी माँ की गलती का पता चलता है वह उसे गालियाँ देता है और पीट भी देता है। लोगों द्वारा उसे भड़काया गया है यह जानकर चाची चुप रह जाती है। उमानाथ नौकरी करने के लिए कलकत्ते चला जाता है। जब उसकी पत्नी आ जाती है तो वह भी पतिकी आज्ञाकारिणी बन अपनी सास को बार -बार प्रताड़ित करती रहती है। इससे परिवार एकदम दूर-सा जाता है।

गौरी और उसकी माँ इन दोनों का सम्बन्ध भी अत्यंत स्नेहिल रहा है। गौरी जब असहाय्य अवस्था में माँ के सामने आ जाती है,तो उसकी माँ उसकी अवस्था को समझाकर उसे सहारा दे देती है और समाज के द्वारा दी जानेवाली प्रताड़ना को रोक देती है। उसकी माँ के सामने कोई कुछ नहीं बोल पाता।

इस उपन्यास में पति-पत्नी सम्बन्ध,सास गौरी और बहू कमलमुखी के सम्बन्ध अत्यंत विघटित थे। आमतौर पर अनमेल विवाह होने के कारण पति-पत्नी के सम्बन्धो में दरार पायी जाती है और कमलमुखी अपने पति की आज्ञाकारिणी बनकर अपनी सास को प्रताड़ित करती है।

'रतिनाथ की चाची' उपन्यास में वर्णित देवर - भाभी सम्बन्ध हिंदी उपन्यास की अमर निधि है। गौरी जैसी भाभी पाठकों की जिस व्यापक संवेदना

---

१ डा. ज्ञानचन्द गुप्त - स्वातन्त्रोत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम चेतना - पृ.१०६।

को जाग्रत करने में सफल हुई ,हिंदी साहित्य में बहुत कम नारी पात्र यह करने में सक्षम रहे हैं। विधवा गौरी अपने देवर जयनाथ की कामातुरता का शिकार हो विभिन्न स्तरों पर असह्य मानसिक पीड़ा सहन करती हुई भी जयनाथ और उसके पुत्र रतिनाथ के प्रति अपने कर्तव्य पालन में चूक नहीं करती। उसका सारा ध्यान रुग्ण-हृदय जयनाथ पर ही केंद्रित रहता है। इस प्रकार वह अपने को जयनाथ से बचाती रही है।' [१]

इसके साथ ही जयकिशोर की विधवा माँ सुमित्रा अपने बेटे को साथ इतना अच्छा बर्ताव करती है कि उसके बेटे को उसपर गर्व महसूस होने लगता है। माँ बेटे का यह एक अलग रूप उपन्यासकार ने चित्रित किया है। जयकिशोर जानता है कि उसकी जो कुछ प्रतिष्ठा इस गाँव में है, वह उसकी माँ की बदौलत है। इसके उलटे उमानाथ लोगों के बहकावे में आकर अपनी माँ को प्रताड़ित करता है।

इस प्रकार पारिवारिक विघटन और मधुर पारिवारिक सम्बन्ध,परिवार के इन दोनों ही रूपों को नागार्जुन ने अपने उपन्यास में चित्रित किया है।

(१५) <u>अमानवीय कृत्य --</u>

रतिनाथ की चाची,उपन्यास एक विधवा के प्रताड़ित,लांछित जीवन को प्रस्तुत करनेवाला उपन्यास है। उपन्यास की नायिका गौरी विधवा है और अपने देवर के साथ उसके बेटे रतिनाथ को संभालने के लिये रहती है। अपने देवर की वासना का शिकार बन जाती है और उसे प्रताड़ित जीवन जीना पड़ता है। मजबूर होकर उसे आठ माह के बच्चे को गिराने का अमानवीय कृत्य करना पड़ता है। यहाँ तक कि जिस बुधना चमारिन ने यह काम किया था वह भी कहती है --

---

१ बाबूराम गुप्त - उपन्यासकार नागार्जुन - पृ.७० ।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

'बडी जातिवालों की तुम्हारी यह बिरादरी बड़ी मलिच्छ,बड़ी निष्ठुर होती है मलिकाइन। हमारी भी बहू-बेटियाँ राँड हो जाती है, पर हमारी बिरादरी पे किसी के पेट से आठ-आठ ,नौ-नौ महीने का बच्चा निकालकर जंगल में फेंक आने का रिवाज नहीं है। 'ओह, कैसा कलेजा होता है तुम लोगोंको ।[1]

इस अमानवीय कृत्य से गौरी को और उसकी माँ को एक चमारिन से भी बूरी-भली बातें सुन लेनी पड़ती है। इस नृशंस कृत्य को वे भले ही समाज के, जाति के,बिरादरी के डर से क्यों न कर रही हो,परंतु यह कृत्य घोर अनैतिक और पाशविक है। इस संदर्भ में डा.ज्ञानचन्द गुप्त जी कहते है कि 'बड़ी जाति वालों की अपेक्षा ये छोटी जातिवाले ही जिन्दगी के मूल्यों के समीप है।'[2]

इस प्रकार इस अमानवीय कृत्य से गौरी के चरित्र की ओर पाठक अधिक धृणा की नजर से देखने लगते है । बाद में वह समाज की सेवा कर अपने चरित्र के उदात्त गुण भी दिखा देती है।

इस प्रकार इस उपन्यास में कई तरह की सामाजिक समस्याएँ देखने को मिलती है। इन सभी सामाजिक समस्याओं को देखकर उस समय समाज में प्रचलित कुरीतियाँ,रूढ़ियाँ,परंपराएँ और जीवनदर्शन आदि का पता हमें चलता है।

---

१ नागार्जुन - रतिनाथ की चाची - पृ.२४।

२ डा.ज्ञानचन्द गुप्त - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और ग्राम चेतना - पृ.११३।

निष्कर्ष

इस प्रथम अध्याय के अध्ययन के उपरान्त हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि नागार्जुन के 'रतिनाथ की चाची' उपन्यास में ग्रामीण जीवन की समस्याओं को चित्रित करते हुए इसमें विधवा गौरी किस प्रकार समाज के अपमान, अत्याचार और संघर्ष का सामना करती है, इसका अत्यन्त हृदयग्राही एवं मार्मिक चित्रण किया गया है।

आलोच्य उपन्यास के केन्द्र में एक गौरी नामक नारी है। शेष सारी घटनाएँ उसी के इर्द-गिर्द चक्कर लगाती है। यह एक ही धरती के जीवन की वास्तव की रचना है, जिसमें मैथिली ब्राह्मणों के सामाजिक स्वरूप एवं समस्याओं के साथ ही अन्य समस्याओं को उजागर करने में रचनाकार की सफलता दिखाई देती है।

* * * * *

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR
SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY